नमूना रिपोर्ट — गोपनीयता के लिए नाम बदला गया है और जन्म विवरण छिपाए गए हैं।

आपकी अपनी रिपोर्ट आपके जन्म विवरण से इसी प्रारूप में बनेगी — नाम, जन्म तिथि, समय और स्थान WhatsApp करें: +91-88720 24022

वैदिक ज्योतिष · D1, D9, दशा, गोचर, जैमिनी उपपद एवं KP आधारित

AstroLiveChat.com

विवाह विश्लेषण रिपोर्ट

नाम: प्रिया

जन्म तिथि: गोपनीय (नमूना)

जन्म समय: गोपनीय (नमूना)

जन्म स्थान: गोपनीय (नमूना)

लग्न: मेष 18°

रिपोर्ट तिथि: 28 अक्टूबर 2026

चंद्र राशि: वृषभ (रोहिणी) | 7वां भाव: तुला · शुक्र | उपपद: वृश्चिक | दाराकारक: सूर्य (मकर) | नवांश लग्न: कन्या | वर्तमान दशा: राहु–मंगल–शुक्र

D1 — लग्न कुंडली

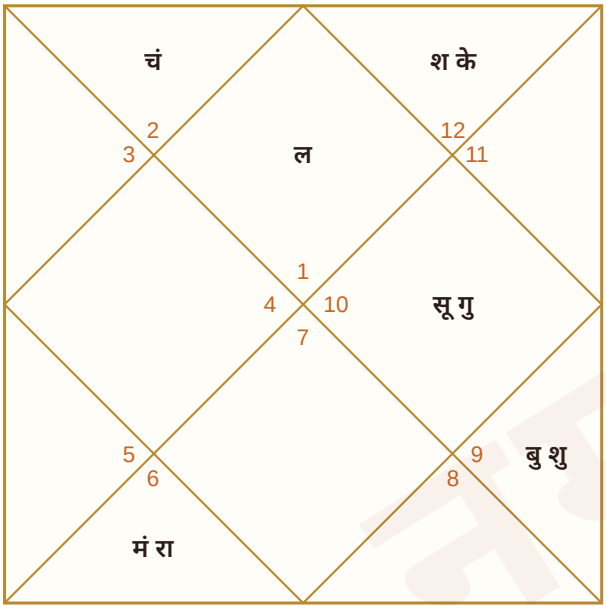

D9 — नवांश कुंडली

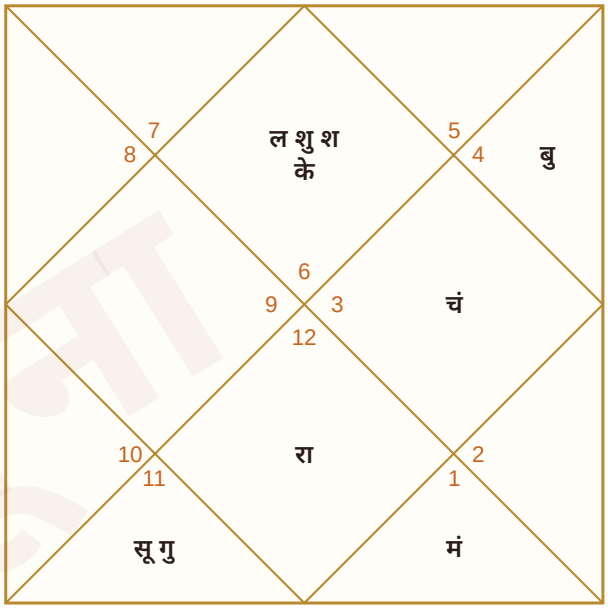

ग्रह	राशि	अंश	भाव	नक्षत्र	ग्रह	राशि	अंश	भाव	नक्षत्र
सूर्य	मकर	5°25′	10	उत्तराषाढ़ा	चंद्रमा	वृषभ	16°41′	2	रोहिणी
मंगल	कन्या	10°18′	6	हस्त	बुध	धनु	11°38′	9	मूल
गुरु	मकर	5°37′	10	उत्तराषाढ़ा	शुक्र	धनु	17°31′	9	पूर्वाषाढ़ा
शनि	मीन	8°41′	12	उत्तरा भाद्रपद	राहु	कन्या	8°16′	6	उत्तरा फाल्गुनी
केतु	मीन	8°16′	12	उत्तरा भाद्रपद					

आपकी शादी — एक नज़र में

प्रिया · पूरी रिपोर्ट का सार, एक पेज में

शादी का पहला अनुकूल समय

26 अगस्त 2027 – 26 नवंबर 2027

इसमें बात तय न हो, तो आगे के अनुकूल समय नीचे देखें

सबसे मजबूत समय

26 जनवरी 2030 – 29 जून 2030

कुल 4 अनुकूल समय — 24 महीने का पूरा कैलेंडर अंदर

जीवनसाथी
जिम्मेदार, शिक्षित और सम्मान देने वाला जीवनसाथी।

लव या अरेंज
अरेंज मैरिज

विवाह के बाद
विवाह के बाद क्रमिक उन्नति।

शुभ राशियां
वृश्चिक, मीन, वृषभ, कुंभ

नाम के अक्षर
न, द, व, स, ह

शुभ मूलांक
3, 2

दिशा
उत्तर
उत्तर प्रमुख; पश्चिम और दक्षिण-पूर्व सहायक क्षेत्र हैं।

वैवाहिक जीवन
प्यार रहेगा; स्पष्ट संवाद रिश्ते को स्थिर रखेगा।

सबसे ज़रूरी उपाय
शुक्रवार शुक्र मंत्र और व्यवहार में स्पष्टता सबसे महत्त्वपूर्ण है।

शादी के सभी अनुकूल समय — क्रम से

पहला अनुकूल समय	26 अगस्त 2027 – 26 नवंबर 2027	अच्छा
दूसरा अनुकूल समय	29 जनवरी 2028 – 7 जून 2028	मजबूत
तीसरा अनुकूल समय	28 फरवरी 2029 – 25 जुलाई 2029	अच्छा
चौथा अनुकूल समय	26 जनवरी 2030 – 29 जून 2030	सबसे मजबूत

इस रिपोर्ट में

जन्म कुंडली और नवांश · विवाह में देरी के कारण · अब तक विवाह क्यों नहीं · शादी का समय · 24 महीने का कैलेंडर · शनि की साढ़ेसाती · लव या अरेंज · जीवनसाथी का पूरा परिचय · वैवाहिक जीवन · विवाह के बाद भाग्योदय · उपाय · शुभ राशि, अक्षर, मूलांक · दिशा और क्षेत्र

हर बात का पूरा कारण आगे के पन्नों में दिया गया है — कुंडली, देरी के कारण, शुभ समय का कैलेंडर, जीवनसाथी का पूरा परिचय, विवाह के बाद का जीवन और उपाय।

जन्म कुंडली (D1) विश्लेषण

मेष लग्न की कुंडली में 7वां भाव तुला राशि का है और उसके स्वामी शुक्र 9वें भाव में धनु राशि में स्थित हैं। 7वें स्वामी का 9वें भाव में होना शिक्षित, समझदार और अच्छे संस्कारों वाले जीवनसाथी का संकेत देता है। दाराकारक सूर्य यानी जीवनसाथी के स्वभाव का सूचक ग्रह 10वें भाव में है, इसलिए पति जिम्मेदार और कर्मशील हो सकते हैं। उपपद यानी विवाह के व्यवहारिक स्वरूप का सूचक वृश्चिक राशि में है और उस पर उच्च चंद्रमा की दृष्टि संबंध में भावनात्मक जुड़ाव बढ़ाती है।

7वें स्वामी शुक्र अपने ही पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में बुध के साथ हैं, जिससे विवाह में बातचीत, समझ और विचारों की समानता महत्त्वपूर्ण होगी। शुक्र पर मंगल और शनि का प्रभाव निर्णय में सावधानी तथा कुछ विलंब ला सकता है। शुक्र के राशि स्वामी गुरु मकर में नीच और अस्त हैं तथा सूर्य के साथ हैं, इसलिए आरंभिक प्रस्तावों में पूरी संतुष्टि मिलने में समय लग सकता है। लग्न, चंद्रमा और शुक्र—तीनों आधारों से मांगलिक प्रभाव नहीं है।

दूसरा भाव वृषभ राशि का है और उसमें उच्च चंद्रमा स्थित है, जिस पर गुरु और शनि की दृष्टि है; यह परिवार बसाने और जिम्मेदारी निभाने की क्षमता देता है। उपपद से दूसरे भाव में बुध और शुक्र विवाह की निरंतरता, अपनापन और संवाद को सहारा देते हैं, हालांकि मंगल और शनि का प्रभाव परिवार तथा खर्च से जुड़े विषयों पर स्पष्टता मांगता है। आरूढ़ लग्न कुंभ राशि में 11वें भाव में है, इसलिए परिचय सामाजिक या professional network से भी आ सकता है। विवाह के बाद सामाजिक दायरा बढ़ने की संभावना है।

KP में 7वें भाव का CSL यानी कस्प का उपस्वामी चंद्रमा है, जबकि उसके उपस्वामी शनि का 11वें भाव से संबंध विवाह की पूर्ति का संकेत देता है। साथ में पहले और 10वें भाव के संबंध देरी, काम की प्राथमिकताओं या निर्णय के दबाव को दिखाते हैं। इसलिए KP का निष्कर्ष विवाह के वादे के साथ कुछ बाधाओं का है। 7वां कस्प उपस्वामी-परिवर्तन से केवल 0.9 कला दूर है, इसलिए जन्म समय में लगभग कुछ सेकंड का अंतर भी KP निष्कर्ष बदल सकता है; सूक्ष्म समय-सुधार के बाद ही CSL पर अंतिम निर्भरता उचित होगी।

जन्म कुंडली में विवाह का योग समर्थित है और संबंध में समझ, सम्मान तथा पारिवारिक स्थिरता की अच्छी संभावना है। सही व्यक्ति चुनने में धैर्य और स्पष्टता विशेष महत्त्व रखेंगे।

विवाह को सहारा देने वाले योग

- 7वें स्वामी शुक्र का 9वें भाव में होना भाग्य और अच्छे संस्कारों का सहारा देता है।
- दाराकारक सूर्य का 10वें भाव में होना जिम्मेदार और प्रतिष्ठा-सचेत पति का संकेत है।
- उच्च चंद्रमा परिवार और भावनात्मक स्थिरता को मजबूत करता है।
- उपपद से दूसरे भाव में शुक्र और बुध संबंध को संवाद तथा अपनापन देते हैं।
- मांगलिक प्रभाव न होना वैवाहिक मिलान में एक सहज पक्ष है।
- 11वें भाव के KP संबंध से विवाह की पूर्ति का संकेत मिलता है।

> **निष्कर्ष**
>
> विवाह का योग है; धैर्यपूर्वक चयन और स्पष्ट संवाद इसे अधिक स्थिर बनाएंगे।

नवांश (D9) विश्लेषण

नवांश यानी विवाह की आंतरिक गुणवत्ता दिखाने वाली कुंडली का लग्न कन्या है और उसके स्वामी बुध 11वें भाव में हैं। इससे विवाह के बाद साझा लक्ष्यों, मित्रता और एक-दूसरे की योजनाओं में सहयोग का आधार बनता है। नवांश का 7वां भाव मीन है और उसमें राहु स्थित है, इसलिए जीवनसाथी या संबंध का आरंभ सामान्य अपेक्षाओं से कुछ अलग हो सकता है। भावनात्मक आदर्शवाद से बचकर व्यवहारिक जानकारी पर भरोसा करना उपयोगी रहेगा।

नवांश के 7वें स्वामी गुरु छठे भाव में सूर्य के साथ हैं, जिससे दिनचर्या, काम और जिम्मेदारियों का उचित बंटवारा जरूरी होगा। शुक्र कन्या नवांश में पहले भाव में शनि और केतु के साथ है, इसलिए आप संबंध को बहुत बारीकी से परख सकती हैं और कभी-कभी अधिक अपेक्षा रख सकती हैं। यही स्थिति जल्दबाजी से बचाती भी है और परिपक्व चुनाव कराती है। किसी ग्रह का वर्गोत्तम समर्थन नहीं है, इसलिए विवाह की मजबूती ग्रहों से अधिक आपसी व्यवहार और निरंतर प्रयास से विकसित होगी।

नवांश विवाह की गहराई में आकर्षण के साथ परिपक्वता, व्यावहारिकता और निरंतर संवाद की जरूरत दिखाता है। समय के साथ संबंध अधिक समझदार और स्थिर बन सकता है।

निष्कर्ष

नवांश स्थिर विवाह की क्षमता देता है, बशर्ते अपेक्षाएँ स्पष्ट और व्यवहारिक रखी जाएँ।

विवाह में देरी के कारण

सार

विवाह का स्पष्ट वादा है, पर देरी और अतिरिक्त प्रयास की संभावना भी है। देरी का मुख्य कारण विवाह की कमी नहीं, बल्कि नवांश के संकेत, बहुत सावधान चयन और सही दशा-गोचर का इंतजार है।

कुंडली में देरी के संकेत

- जन्म कुंडली के 7वें स्वामी शुक्र का नवांश में कन्या राशि में नीच होना अपेक्षाओं और चयन को अधिक सूक्ष्म बनाता है, पर गुरु की 7वें भाव पर दृष्टि इसका असर कम करती है।
- नवांश के 7वें भाव में राहु शुरुआत में असमंजस या असामान्य प्रस्ताव दे सकता है, पर चंद्रमा का 7वें स्वामी पर शुभ प्रभाव भावनात्मक समझ बढ़ाता है।
- नवांश के 7वें स्वामी गुरु का छठे भाव में होना जिम्मेदारियों और दिनचर्या के कारण निर्णय धीमा कर सकता है, पर जन्म कुंडली में 7वें स्वामी का 9वें भाव में होना इसका असर कम करता है।
- शुक्र का राशि स्वामी गुरु कमजोर होने से उचित प्रस्ताव पर विश्वास बनने में समय लग सकता है, पर नवांश लग्न में शुक्र आकर्षण और विवाह की इच्छा को बनाए रखता है।
- नवांश में राहु-केतु की पहले और 7वें भाव की धुरी अधिक सोच तथा तुलना बढ़ा सकती है, पर उपपद से दूसरे भाव में बुध और शुक्र संबंध को सहारा देते हैं।
- वर्तमान राहु-मंगल अवधि का विवाह से संबंध सीमित है, पर 18 सितंबर 2026 से 21 नवंबर 2026 तक शुक्र प्रत्यंतर दूसरे और 7वें भाव से मजबूत रूप से जुड़ा है।

सलाह: प्रस्तावों को केवल पहली छाप पर न रोकें। परिवार की प्राथमिकताएँ, स्थान, काम और भविष्य की अपेक्षाएँ आरंभ में ही स्पष्ट कर लें।

अब तक विवाह क्यों नहीं हुआ

सार

अब तक का इंतजार मुख्यतः ऐसी दशाओं के कारण रहा जिनका विवाह के दूसरे, 7वें और 11वें भावों से पूरा संबंध नहीं बन रहा था। शुक्र की एक आंशिक रूप से जुड़ी अवधि ने अवसर बनाए, पर उसे पर्याप्त दशा और गोचर समर्थन एक साथ नहीं मिला।

21 वर्ष की आयु से अब तक की दशाएं

दशा (महादशा–अंतर्दशा)	आयु	अवधि	विवाह से जुड़ाव
राहु – बुध	21-22	19 जनवरी 2018 – 13 जुलाई 2019	नहीं जुड़ी
राहु – केतु	22-23	13 जुलाई 2019 – 30 जुलाई 2020	नहीं जुड़ी
राहु – शुक्र	23-26	30 जुलाई 2020 – 31 जुलाई 2023	आंशिक
राहु – सूर्य	26-27	31 जुलाई 2023 – 24 जून 2024	नहीं जुड़ी
राहु – चंद्रमा	27-28	24 जून 2024 – 24 दिसंबर 2025	नहीं जुड़ी
राहु – मंगल	28-29	24 दिसंबर 2025 – 28 अक्टूबर 2026	अभी चल रही — समय अनुभाग देखें

- 19 जनवरी 2018 से 13 जुलाई 2019 तक राहु-बुध अवधि, उम्र 21–22, में बुध केवल 11वें भाव से कमजोर रूप से जुड़ा था; इसलिए गंभीर कोशिशें भी आसानी से अंतिम रूप नहीं ले सकीं।
- 13 जुलाई 2019 से 30 जुलाई 2020 तक राहु-केतु अवधि, उम्र 22–23, में केतु का 11वें भाव से सीमित संबंध था और राहु विवाह भावों से नहीं जुड़ा था।
- 30 जुलाई 2020 से 31 जुलाई 2023 तक राहु-शुक्र अवधि, उम्र 23–26, में शुक्र 7वें स्वामी और दूसरे तथा 7वें भाव का कारक होने से अवसर बना सकता था, पर राहु का विवाह से सीधा संबंध न होने से यह केवल आंशिक रूप से समर्थित रहा।
- 31 जुलाई 2023 से 24 जून 2024 तक राहु-सूर्य और 24 जून 2024 से 24 दिसंबर 2025 तक राहु-चंद्र अवधि, उम्र 26–28, विवाह के मुख्य भावों से नहीं जुड़ी थीं; इसलिए समय अधिकतर काम, मन और व्यक्तिगत स्थिरता पर गया।
- 24 दिसंबर 2025 से चल रही राहु-मंगल अवधि, उम्र 28–29, में मंगल उपपद स्वामी है लेकिन KP में दूसरे, 7वें या 11वें भाव से नहीं जुड़ा; इसका आगे का परिणाम समय खंडों के अनुसार विवाह समय में देखा गया है।
- आने वाले अवसर 26 अगस्त 2027 से 26 नवंबर 2027, 29 जनवरी 2028 से 7 जून 2028, 28 फरवरी 2029 से 25 जुलाई 2029 और 26 जनवरी 2030 से 29 जून 2030 हैं।

विवाह का समय

सार

पहला अनुकूल समय 26 अगस्त 2027 से 26 नवंबर 2027 है। यदि इसमें विवाह तय न हो, तो अगला अधिक मजबूत समय 29 जनवरी 2028 से 7 जून 2028 रहेगा; इसके बाद 28 फरवरी 2029 से 25 जुलाई 2029 अवसर देगा। सबसे प्रबल समय 26 जनवरी 2030 से 29 जून 2030 है, जिसमें दशा और गोचर दोनों का बेहतर मेल बनता है।

क्रम	अवधि	क्या संभव है
पहला अनुकूल समय अच्छा	26 अगस्त 2027 – 26 नवंबर 2027	गुरु-गुरु-बुध प्रत्यंतर में बुध का KP में 11वें भाव से संबंध है और शुक्र पर गुरु के बाद डबल गोचर का समर्थन मिलता है।
दूसरा अनुकूल समय मजबूत	29 जनवरी 2028 – 7 जून 2028	गुरु-गुरु-शुक्र प्रत्यंतर में शुक्र दूसरे और 7वें भाव का प्रमुख कारक है तथा 7वें भाव और शुक्र पर क्रमिक गुरु-शनि समर्थन बनता है।
तीसरा अनुकूल समय अच्छा	28 फरवरी 2029 – 25 जुलाई 2029	गुरु-शनि-शनि अवधि में शनि KP में 11वें भाव से जुड़ा है और 7वें भाव तथा दाराकारक पर डबल गोचर सक्रिय रहता है।
चौथा अनुकूल समय सबसे मजबूत	26 जनवरी 2030 – 29 जून 2030	गुरु-शनि-शुक्र अवधि में शनि 11वें और शुक्र दूसरे तथा 7वें भाव से जुड़ते हैं, साथ ही उपपद और 7वें भाव पर मजबूत गोचर समर्थन मिलता है।

पहले अनुकूल समय में विवाह तय न हो, तो अगला अनुकूल समय देखें।

ज्योतिषीय आधार

- 26 अगस्त 2027 से गुरु-गुरु-बुध प्रत्यंतर यानी अंतर्दशा के भीतर छोटा समयखंड चलता है; बुध KP में 11वें भाव से जुड़ा है और वर्तमान ruling planets में भी है।
- 29 जनवरी 2028 से शुक्र प्रत्यंतर सक्रिय होता है; शुक्र 7वें भाव का स्वामी और KP में दूसरे तथा 7वें भाव का प्रमुख कारक है।
- 28 फरवरी 2029 से गुरु-शनि-शनि अवधि में अंतर्दशा और प्रत्यंतर दोनों के स्वामी शनि KP में 11वें भाव से जुड़े हैं।
- 26 जनवरी 2030 से गुरु-शनि-शुक्र में शनि 11वें और शुक्र दूसरे तथा 7वें भाव से जुड़ते हैं; साथ में 7वें भाव, उपपद और दाराकारक पर मजबूत गोचर समर्थन मिलता है।
- जीवन की दूसरी साढ़ेसाती 3 जून 2027 से 12 जुलाई 2034 तक रहेगी और उसका पहला चरण 3 जून 2027 से 16 अप्रैल 2030 तक फैला है; उच्च चंद्रमा और चंद्र राशि से योगकारक शनि के कारण इसका स्तर इस कुंडली में हल्का है।

सावधानी: अभी साढ़ेसाती या ढैय्या नहीं है। आने वाली हल्की साढ़ेसाती चारों समयों को आंशिक या पूर्ण रूप से छूती है; शनि विवाह के लिए यहाँ तटस्थ है, इसलिए यह विवाह नहीं रोकता, पर परिवार की सहमति, जिम्मेदारियों और कागजी प्रक्रिया में धैर्य तथा स्पष्टता रखना जरूरी होगा।

शादी का 24 महीने का कैलेंडर

सबसे मजबूत · मजबूत · अच्छा · सामान्य · खरमास विवाह मुहूर्त कम

नवंबर 2026 सामान्य	**दिसंबर** 2026 सामान्य खरमास	**जनवरी** 2027 सामान्य खरमास	**फरवरी** 2027 सामान्य	**मार्च** 2027 सामान्य खरमास	**अप्रैल** 2027 सामान्य खरमास
मई 2027 सामान्य	**जून** 2027 सामान्य	**जुलाई** 2027 सामान्य	**अगस्त** 2027 सामान्य	**सितंबर** 2027 अच्छा · पहला	**अक्टूबर** 2027 अच्छा · पहला
नवंबर 2027 अच्छा · पहला	**दिसंबर** 2027 सामान्य खरमास	**जनवरी** 2028 सामान्य खरमास	**फरवरी** 2028 मजबूत · दूसरा	**मार्च** 2028 मजबूत · दूसरा खरमास	**अप्रैल** 2028 मजबूत · दूसरा खरमास
मई 2028 मजबूत · दूसरा	**जून** 2028 मजबूत · दूसरा	**जुलाई** 2028 सामान्य	**अगस्त** 2028 सामान्य	**सितंबर** 2028 सामान्य	**अक्टूबर** 2028 सामान्य

इन 24 महीनों के बाद: तीसरा अनुकूल समय 28 फरवरी 2029 – 25 जुलाई 2029 · चौथा अनुकूल समय 26 जनवरी 2030 – 29 जून 2030

रंगीन महीने रिश्ता तय करने, सगाई और विवाह के लिए अनुकूल हैं। विवाह की सही तिथि इन्हीं महीनों में पंचांग से शुभ मुहूर्त देखकर रखें; खरमास वाले महीनों में आमतौर पर विवाह मुहूर्त कम होते हैं।

शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या — पूरी गणना

अभी की स्थिति: इस समय साढ़ेसाती नहीं चल रही है।

अगली साढ़ेसाती: 3 जून 2027 – 12 जुलाई 2034 (आयु 30–37)

अगली ढैय्या: ढैय्या — कंटक / अर्धाष्टम शनि (चंद्र राशि से 4था) — 28 अगस्त 2036 – 12 जुलाई 2039

इस कुंडली में प्रभाव: हल्का

दबाव बढ़ाने वाले कारण: जन्म से ही शनि का प्रभाव चंद्रमा पर है — मन शनि के प्रति संवेदनशील

राहत देने वाले कारण: आपकी चंद्र राशि से शनि योगकारक है; चंद्रमा उच्च का है — मन मजबूत; जन्म कुंडली में गुरु की दृष्टि या साथ चंद्रमा पर है; चंद्रमा पूर्ण बल के पास (शुक्ल पक्ष का उज्ज्वल चंद्र) है

चरण	शनि की राशि	अवधि	लग्न से भाव	स्थिति
पहला चरण (उदय)	मेष	3 जून 2027 – 19 अक्टूबर 2027	1ला	आने वाला
पहला चरण (उदय) (फिर से)	मेष	24 फरवरी 2028 – 8 अगस्त 2029	1ला	आने वाला
दूसरा चरण (शिखर)	वृषभ	9 अगस्त 2029 – 5 अक्टूबर 2029	2रा	आने वाला
पहला चरण (उदय) (शनि वक्री होकर वापस)	मेष	6 अक्टूबर 2029 – 16 अप्रैल 2030	1ला	आने वाला
दूसरा चरण (शिखर) (फिर से)	वृषभ	17 अप्रैल 2030 – 30 मई 2032	2रा	आने वाला
तीसरा चरण (अस्त)	मिथुन	31 मई 2032 – 12 जुलाई 2034	3रा	आने वाला

हर चरण की पूरी अवधि (बीच के विराम सहित): पहला चरण 3 जून 2027 – 16 अप्रैल 2030 · दूसरा चरण 9 अगस्त 2029 – 30 मई 2032 · तीसरा चरण 31 मई 2032 – 12 जुलाई 2034

पहला चरण (उदय): खर्च, नींद, यात्रा, दूरी और बाहरी भागदौड़ — काम बढ़ता है, फल बाद में मिलता है। **दूसरा चरण (शिखर):** सबसे अधिक दबाव — मन, स्वास्थ्य, ज़िम्मेदारी और धैर्य की परीक्षा; यही समय व्यक्ति को परिपक्व बनाता है। **तीसरा चरण (अस्त):** परिवार, धन, वाणी और जमा-पूंजी पर ध्यान — दबाव घटता है और मेहनत का फल स्थिर होने लगता है।

गुरु की सहायता (इन अवधियों में दबाव कम रहता है)

27 नवंबर 2027 – 28 फरवरी 2028 · 25 जुलाई 2028 – 26 दिसंबर 2028 · 30 मार्च 2029 – 24 अगस्त 2029 · 25 जनवरी 2030 – 1 मई 2030 · 23 सितंबर 2030 – 17 फरवरी 2031 · 14 जून 2031 – 15 अक्टूबर 2031 · 6 मार्च 2032 – 12 अगस्त 2032 · 24 अक्टूबर 2032 – 17 मार्च 2033 · 28 मार्च 2034 – 12 जुलाई 2034

जीवन की सभी साढ़ेसाती

क्रम	अवधि	आयु	स्थिति
जीवन की पहली साढ़ेसाती	18 अप्रैल 1998 – 25 मई 2005	1–8 वर्ष	बीत चुका
जीवन की दूसरी साढ़ेसाती	3 जून 2027 – 12 जुलाई 2034	30–37 वर्ष	आने वाला
जीवन की तीसरी साढ़ेसाती	7 अप्रैल 2057 – 9 मई 2064	60–67 वर्ष	आने वाला

ढैय्या (शनि चंद्र से 4थे / 8वें)

प्रकार	शनि की राशि	अवधि	स्थिति
ढैय्या — कंटक / अर्धाष्टम शनि (चंद्र राशि से 4था)	सिंह	28 अगस्त 2036 – 12 जुलाई 2039	आने वाला

साढ़ेसाती डर का विषय नहीं है। यह मेहनत, अनुशासन और परिपक्वता का समय है; इसका फल पूरी कुंडली और दशा पर निर्भर करता है।

विवाह का स्वरूप — लव या अरेंज

अरेंज मैरिज

परिवार की भागीदारी से होने वाले व्यवस्थित विवाह की संभावना अधिक है। परिचय के बाद आपसी पसंद, बातचीत और भावनात्मक सहमति विकसित होगी, इसलिए इसमें आपकी व्यक्तिगत स्वीकृति पूरी तरह महत्त्वपूर्ण रहेगी।

प्रेम (Love) की ओर संकेत

- 7वें स्वामी शुक्र का बुध के साथ होना परिचय के बाद संवाद और आकर्षण बढ़ाता है।
- आरूढ़ लग्न का 11वें भाव में होना मित्रों या professional network से परिचय की संभावना रखता है।

परिवार (Arranged) की ओर संकेत

- 7वें स्वामी का 9वें भाव में होना परिवार, संस्कार और बड़ों की भूमिका को मजबूत करता है।
- 5वें स्वामी सूर्य का 9वें स्वामी गुरु के साथ होना पारिवारिक मूल्यों को प्राथमिकता देता है।
- उच्च चंद्रमा वाला दूसरा भाव परिवार बसाने की इच्छा और सहयोग बढ़ाता है।

सलाह: परिवार द्वारा सुझाए गए रिश्तों में भी पर्याप्त बातचीत और अपनी स्वतंत्र सहमति को प्राथमिकता दें।

जीवनसाथी का स्वभाव

सार

आपके पति समझदार, जिम्मेदार और अपने काम को गंभीरता से लेने वाले हो सकते हैं। उनका स्वभाव सभ्य और संतुलित होगा, लेकिन वे सम्मान, स्पष्टता और व्यावहारिक सोच को काफी महत्त्व देंगे।

- बातचीत में शालीन, तर्कपूर्ण और विषय को समझकर बोलने वाले होंगे।
- अपने काम, प्रतिष्ठा और जिम्मेदारियों के प्रति गंभीर रहेंगे।
- परिवार के संस्कारों का सम्मान करेंगे, पर सोच में पूरी तरह पुराने ढंग के नहीं होंगे।
- भावनाएँ गहरी होंगी, लेकिन उन्हें व्यक्त करने में थोड़ा समय ले सकते हैं।
- निर्णय लेने से पहले जानकारी और भविष्य की योजना पर ध्यान देंगे।
- शिक्षा, प्रशासन, सलाह, प्रबंधन या ज्ञान-आधारित काम में रुचि हो सकती है।
- जन्मस्थान से दूर रहने या अलग शहर की पृष्ठभूमि होने की संभावना है।

शुरुआत में काम, रहने के स्थान और पारिवारिक जिम्मेदारियों पर खुलकर बात करें।

जीवनसाथी का पूरा परिचय

कामकाज	प्रशासन, शिक्षा, सलाह, वित्त या प्रबंधन से जुड़े काम की प्रवृत्ति कुंडली में आधार: दाराकारक सूर्य 10वें भाव में; 7वें स्वामी शुक्र बुध के साथ 9वें भाव में
शिक्षा	अच्छी औपचारिक शिक्षा और आगे के विशेष प्रशिक्षण की संभावना कुंडली में आधार: 7वें स्वामी शुक्र का 9वें भाव में बुध के साथ होना
परिवार	संस्कारी, जिम्मेदार और शिक्षा को महत्त्व देने वाला परिवार कुंडली में आधार: दूसरा भाव वृषभ में उच्च चंद्रमा; गुरु और शनि की दृष्टि
उम्र का अंतर	लगभग समान आयु या कुछ बड़े होने की प्रवृत्ति कुंडली में आधार: शुक्र पर शनि की दृष्टि; दाराकारक सूर्य मकर राशि में
मुलाकात कैसे	परिवार, रिश्तेदार, professional network या शिक्षा-यात्रा के माध्यम से परिचय कुंडली में आधार: 7वें स्वामी शुक्र 9वें भाव में; आरूढ़ लग्न 11वें भाव में

ये संकेत प्रवृत्ति बताते हैं, निश्चित तथ्य नहीं; रिश्ता देखते समय इन्हें एक मार्गदर्शन की तरह उपयोग करें।

वैवाहिक जीवन कैसा रहेगा

सार

वैवाहिक जीवन में भावनात्मक जुड़ाव और बातचीत दो सबसे बड़े सहारे रहेंगे। मतभेद मुख्यतः अपेक्षाओं, परिवार या जिम्मेदारियों को लेकर हो सकते हैं, लेकिन समय पर संवाद से संबंध स्थिर रह सकता है।

- उपपद यानी विवाह के व्यवहारिक स्वरूप पर उच्च चंद्रमा की दृष्टि होने से पति-पत्नी के बीच अपनापन और भावनात्मक सुरक्षा अच्छी रहेगी।
- उपपद से दूसरे भाव में शुक्र और बुध होने से प्रेम, बातचीत और साथ मिलकर निर्णय लेने की क्षमता विवाह को टिकाऊ बनाएगी।
- उपपद से दूसरे भाव पर मंगल और शनि का प्रभाव होने से परिवार, खर्च या जिम्मेदारियों पर कभी-कभी कठोर बातचीत हो सकती है; शब्दों में नरमी रखना जरूरी होगा।
- नवांश यानी विवाह की आंतरिक गुणवत्ता के 7वें भाव में राहु होने से एक-दूसरे को आदर्श मानने या जल्द अनुमान लगाने से बचना चाहिए।
- नवांश के 7वें स्वामी गुरु का छठे भाव में होना बताता है कि घरेलू काम, समय और जिम्मेदारियों का संतुलित बंटवारा संबंध को मजबूत करेगा।
- नवांश में शुक्र कन्या राशि में होने से छोटी कमियों पर अधिक ध्यान जा सकता है; प्रशंसा और स्वीकार्यता बढ़ाने से प्रेम सहज रहेगा।

सलाह: हर सप्ताह शांत समय में काम, परिवार और खर्च पर खुली बातचीत करें। असहमति के समय तुरंत निष्कर्ष निकालने के बजाय एक-दूसरे को पूरा सुनें।

कुंडली में आधार:

- **उपपद (विवाह की स्थिरता):** वृश्चिक — स्वामी मंगल, छठे भाव में; चंद्रमा की दृष्टि
- **उपपद से दूसरा (विवाह का टिकना, परिवार):** धनु — बुध, शुक्र; मंगल, शनि की दृष्टि
- **नवांश का 7वां भाव:** मीन (राहु); स्वामी गुरु — कुंभ, छठे भाव में (सूर्य के साथ)
- **शुक्र (विवाह कारक):** धनु, 9वें भाव में — बुध के साथ

विवाह के बाद जीवन — भाग्योदय

सार

विवाह के बाद career, सामाजिक सम्मान और घर-परिवार की स्थिरता में धीरे-धीरे सुधार हो सकता है। धन और सुविधाएँ बढ़ने की क्षमता है, लेकिन खर्च और बचत का संतुलन बनाना आवश्यक रहेगा।

career की दिशा | घर की स्थिरता | पारिवारिक सम्मान | बचत और खर्च

- 9वें स्वामी गुरु का 10वें भाव में सूर्य के साथ होना विवाह के बाद career की दिशा, जिम्मेदारी और सामाजिक पहचान में वृद्धि दे सकता है, हालांकि प्रगति क्रमिक रहेगी।
- दूसरे भाव में उच्च चंद्रमा और उस पर गुरु की दृष्टि होने से पारिवारिक सुख तथा आर्थिक सुरक्षा बनाने की क्षमता बढ़ती है।
- चौथे भाव पर सूर्य और गुरु की दृष्टि तथा चौथे स्वामी चंद्रमा का दूसरे भाव में होना घर, रहने की सुविधा और परिवार से जुड़े निर्णयों को सहारा देता है।
- उपपद से दूसरे भाव में बुध और शुक्र होने से पति के सहयोग, समझदारी और साझा योजना से जीवन की सुविधाएँ बढ़ सकती हैं।
- 11वें स्वामी शनि के 12वें भाव में होने से आमदनी के साथ खर्च भी बढ़ सकते हैं; संयुक्त बजट और नियमित बचत जरूरी होगी।

आपकी कुंडली के अनुसार उपाय

सार

सरल और नियमित उपाय मन की स्पष्टता तथा सही निर्णय लेने में मदद करेंगे। किसी महंगे रत्न या पूजा की आवश्यकता नहीं है।

ग्रह	क्यों	सरल उपाय
शुक्र	नवांश में नीच होकर अपेक्षाएँ बढ़ाता है	शुक्रवार ॐ शुं शुक्राय नमः जपें, सफेद चावल दान करें और प्रशंसा व्यक्त करें
गुरु	दुर्बल होकर निर्णय में देर दे सकता है	गुरुवार ॐ बृं बृहस्पतये नमः जपें, पीली दाल दान करें और बड़ों की सलाह सुनें
राहु	नवांश के 7वें भाव में भ्रम बढ़ाता है	शनिवार ॐ रां राहवे नमः जपें, काले तिल दान करें और जल्द निष्कर्ष न निकालें

शीघ्र और योग्य विवाह के लिए (कात्यायनी मंत्र)

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः॥

प्रतिदिन सुबह स्नान के बाद 11 बार, माँ कात्यायनी का ध्यान करके

उपायों से अधिक महत्त्व नियमितता, सही चयन और ईमानदार संवाद का है।

शुभ राशियां

सार

जीवनसाथी की राशि के लिए वृश्चिक और मीन सबसे अनुकूल संकेत देती हैं; वृषभ भी अच्छा मेल रखती है। अंतिम निर्णय पूरी कुंडली और गुण मिलान देखकर ही लेना चाहिए।

क्र.	राशि	कुंडली में आधार	आपकी चंद्र राशि से मेल (वृषभ)
1	**वृश्चिक**	वृश्चिक उपपद की राशि और जन्म चंद्रमा से 7वीं राशि होने के कारण सबसे मजबूत संकेत देती है।	दोष नहीं 7/7
2	**मीन**	मीन नवांश के 7वें भाव की राशि और विवाह कारक गुरु की अपनी राशि होने से अनुकूल है।	दोष नहीं 11/3
3	**वृषभ**	वृषभ 7वें स्वामी शुक्र की अपनी राशि और आपकी चंद्र राशि होने से स्थिरता देता है।	दोष नहीं समान राशि
4	**कुंभ**	कुंभ आरूढ़ लग्न की राशि होने से सामाजिक समझ और मित्रतापूर्ण तालमेल बढ़ा सकती है।	दोष नहीं 10/4
5	**कर्क**	कर्क जन्म चंद्रमा से तीसरी राशि होने के कारण सहयोग और भावनात्मक संवाद का अच्छा मेल दे सकती है।	दोष नहीं 3/11
6	**सिंह**	सिंह जन्म चंद्रमा से चौथी राशि होने के कारण आत्मसम्मान और पारिवारिक आधार का संतुलित मेल दे सकती है।	दोष नहीं 4/10
7	**तुला**	तुला जन्म कुंडली के 7वें भाव और शुक्र की अपनी राशि होने से तकनीकी रूप से मजबूत है, पर चंद्र राशि से 6/8 संबंध के कारण गुण मिलान अनिवार्य है।	गुण मिलान जरूरी 6/8

ध्यान दें: तुला, मकर, कन्या, धनु, मेष और मिथुन राशियों के साथ भकूट पक्ष विशेष रूप से जाँचें; तुला में दोष-निरस्तीकरण संभव है।

जीवनसाथी के नाम का पहला अक्षर

सार

जीवनसाथी के नाम की संभावित शुरुआती ध्वनियाँ न, द, व, स, ह, म और य हैं। नीचे दिए नाम केवल इन ध्वनियों के सरल उदाहरण हैं।

क्र.	अक्षर	संबंधित राशि	इसी राशि के शुभ अक्षर	उदाहरण नाम
1	**न**	वृश्चिक	तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू	नितिन, नवीन, नीरज
2	**द**	मीन	दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची	दीपक, देवेंद्र, दक्ष
3	**व**	वृषभ	इ, उ, ए, वे, वो	विवेक, वरुण, विनय
4	**स**	कुंभ	गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा	सौरभ, सचिन, समीर
5	**ह**	कर्क	ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो	हर्ष, हिमांशु, हरीश
6	**म**	सिंह	मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे	मनीष, मोहित, मुकुल
7	**य**	वृश्चिक	तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू	यश, योगेश, युवराज

ध्यान दें: नाम का अक्षर सहायक संकेत है; वास्तविक अनुकूलता पूरी जन्म कुंडली से तय होती है।

नमूना

शुभ मूलांक

सार

जीवनसाथी के लिए मूलांक 3 और 2 सबसे अनुकूल हैं, जबकि 9 और 1 भी अच्छे माने गए हैं। मूलांक जन्म के दिन को एक अंक में बदलकर निकाला जाता है।

आपका मूलांक: 1 (सूर्य) · **भाग्यांक:** 1 (सूर्य)

मूलांक	जन्म तारीख	स्तर	कारण
3	3, 12, 21, 30	सर्वश्रेष्ठ	मूलांक 3 का स्वामी गुरु है; सूर्य-प्रधान आपके मूलांक से मित्रता और नवांश के 7वें स्वामी होने से यह सर्वोत्तम मेल है।
2	2, 11, 20, 29	सर्वश्रेष्ठ	मूलांक 2 का स्वामी उच्च चंद्रमा है; सूर्य से मित्रता के कारण यह भावनात्मक और पारिवारिक तालमेल देता है।
9	9, 18, 27	अच्छा	मूलांक 9 का स्वामी मंगल है; सूर्य से मित्रता और उपपद स्वामी होने के कारण यह अच्छा मेल है।
1	1, 10, 19, 28	अच्छा	मूलांक 1 का स्वामी सूर्य है; समान मूलांक और दाराकारक होने से सम्मान तथा लक्ष्य की समानता मिल सकती है।
5	5, 14, 23	सामान्य	मूलांक 5 का स्वामी बुध है; सूर्य से सामान्य मित्रता होने के कारण यह संवाद-केंद्रित पर तटस्थ मेल है।
7	7, 16, 25	सामान्य	मूलांक 7 का स्वामी केतु है; सूर्य से मित्रता के कारण यह तटस्थ लेकिन विचारशील मेल दे सकता है।
4	4, 13, 22, 31	सामान्य	मूलांक 4 का स्वामी राहु है; सूर्य से मतभेद के बावजूद पारंपरिक 1–4 संयोजन इसे तटस्थ बनाता है।
6	6, 15, 24	सामान्य	मूलांक 6 का स्वामी शुक्र और 7वें भाव का स्वामी है, फिर भी सूर्य से विरोध के कारण यह तटस्थ मेल है।
8	8, 17, 26	सावधानी	मूलांक 8 का स्वामी शनि है; सूर्य से विरोध के कारण इसमें अपेक्षाओं और स्वभाव का सावधानीपूर्वक मिलान जरूरी है।

ध्यान दें: ये जीवनसाथी के जन्म-दिन के मूलांक हैं, विवाह या रोका की तारीखें नहीं; मुहूर्त अलग से पंचांग द्वारा चुना जाता है।

जीवनसाथी की दिशा

सार

जीवनसाथी के स्थान की प्रमुख दिशा उत्तर है, जबकि पश्चिम और दक्षिण-पूर्व सहायक दिशाएँ हैं। जन्मस्थान से संबंध दूर या बहुत दूर के क्षेत्र में बनने की संभावना अधिक है।

संकेतक	दिशा	बल
7वें भाव की राशि तुला (वायु तत्व)	पश्चिम	3
7वें भाव के स्वामी शुक्र की दिशा	दक्षिण-पूर्व	3
नवांश के 7वें भाव की राशि मीन (जल तत्व)	उत्तर	2
उपपद लग्न वृश्चिक (जल तत्व)	उत्तर	2
दाराकारक सूर्य — मकर राशि (पृथ्वी तत्व)	दक्षिण	1
विवाह कारक गुरु — मकर राशि (पृथ्वी तत्व)	दक्षिण	1

- नवांश के 7वें भाव की मीन राशि उत्तर दिशा को समर्थन देती है।
- वृश्चिक उपपद भी उत्तर दिशा का संकेत मजबूत करता है।
- जन्म कुंडली के 7वें भाव की तुला राशि पश्चिम दिशा दिखाती है।
- 7वें स्वामी शुक्र का धनु राशि में होना दक्षिण-पूर्व दिशा का सहायक संकेत है।

दिशा और दूरी इस स्थान से गिनी गई है: जन्मस्थान (नमूने में गोपनीय). **दूरी का संकेत:** दूर (400–1200 km). 7वें स्वामी का 9वें भाव में होना और तुला का चर स्वभाव दूरी बढ़ाते हैं; विदेश का स्पष्ट संकेत नहीं है।

जीवनसाथी का संभावित क्षेत्र

सार

जन्मस्थान से उत्तर दिशा का दूर से बहुत दूर वाला क्षेत्र प्रमुख है; पश्चिम और दक्षिण-पूर्व के दूरस्थ क्षेत्र भी संभव हैं। नीचे उस दिशा और दूरी में आने वाले मुख्य शहर केवल उदाहरण के रूप में दिए गए हैं।

इस क्षेत्र के प्रमुख शहर (उदाहरण)

क्र.	शहर	राज्य	दिशा	दूरी	दिशा समूह
1	**लुधियाना**	पंजाब	उत्तर-पश्चिम	~661 km	प्रमुख
2	**चंडीगढ़**	चंडीगढ़	उत्तर-पश्चिम	~589 km	प्रमुख
3	**देहरादून**	उत्तराखंड	उत्तर-पश्चिम	~486 km	प्रमुख
4	**सहारनपुर**	उत्तर प्रदेश	उत्तर-पश्चिम	~477 km	प्रमुख
5	**जयपुर**	राजस्थान	पश्चिम	~454 km	सहायक
6	**कोटा**	राजस्थान	पश्चिम	~471 km	सहायक
7	**रांची**	झारखंड	दक्षिण-पूर्व	~609 km	सहायक

ध्यान दें: कुंडली जीवनसाथी के स्थान की दिशा और दूरी बताती है, कोई निश्चित शहर नहीं; आपके रहने का स्थान बदलने पर यह क्षेत्र भी बदल जाएगा।

एक नजर में सारांश

देरी का मुख्य कारण	देरी है, पर सही समय और प्रयास से विवाह समर्थित है।
अब तक देरी क्यों	पिछली दशाएँ पूरी तरह विवाह-सहायक नहीं थीं।
शादी कब	पहला: 26 अगस्त 2027 – 26 नवंबर 2027 · दूसरा: 29 जनवरी 2028 – 7 जून 2028 · तीसरा: 28 फरवरी 2029 – 25 जुलाई 2029 · चौथा: 26 जनवरी 2030 – 29 जून 2030 (सबसे मजबूत)
लव या अरेंज	अरेंज मैरिज
जीवनसाथी	जिम्मेदार, शिक्षित और सम्मान देने वाला जीवनसाथी।
वैवाहिक जीवन	प्यार रहेगा; स्पष्ट संवाद रिश्ते को स्थिर रखेगा।
शुभ राशियां	वृश्चिक, मीन, वृषभ, कुंभ, कर्क, सिंह, तुला (केवल गुण मिलान के बाद)
नाम के अक्षर	न, द, व, स, ह, म, य
शुभ मूलांक	सर्वश्रेष्ठ: 3, 2 · अच्छा: 9, 1
दिशा	प्रमुख: उत्तर · सहायक: पश्चिम, दक्षिण-पूर्व
संभावित क्षेत्र	उत्तर प्रमुख; पश्चिम और दक्षिण-पूर्व सहायक क्षेत्र हैं।

कुंडली में विवाह का आधार मौजूद है और आने वाले वर्षों में क्रमशः मजबूत अवसर बनते हैं। परिवार की सहायता के साथ अपनी पसंद, रहने के स्थान, काम और भविष्य की जिम्मेदारियों पर खुलकर बात करें। धैर्य और व्यवहारिक चयन आपके लिए सबसे प्रभावी मार्ग रहेगा।

अस्वीकरण: यह रिपोर्ट ज्योतिषीय गणना और व्याख्या पर आधारित है और किसी घटना की गारंटी नहीं देती। विवाह का वास्तविक समय और परिणाम व्यक्तिगत निर्णयों, परिस्थितियों और अन्य कारकों पर भी निर्भर करते हैं। किसी भी रिश्ते को अंतिम रूप देने से पहले दोनों की कुंडली का पूर्ण मिलान अवश्य करें।

रिश्ता आया है, पर निर्णय नहीं ले पा रहे?

शादी जैसा बड़ा फैसला केवल गुणों की संख्या देखकर न लें। **AstroLiveChat कुंडली मिलान रिपोर्ट** में दोनों की पूरी कुंडली देखकर बताया जाता है कि यह रिश्ता आपके लिए कैसा रहेगा:

- 36 गुणों का पूरा अष्टकूट मिलान
- मांगलिक, नाड़ी और भकूट दोष — परिहार सहित
- क्या मिलता है और क्या नहीं — दोनों कुंडलियों की तुलना
- दोनों की शनि साढ़ेसाती, ढैय्या और शनि दशा
- दोनों के लिए साझा शुभ विवाह समय
- स्पष्ट निष्कर्ष और रिश्ता पक्का करने से पहले सलाह



गुण मिलान का परिणाम और निष्कर्ष



36 गुणों की पूरी तालिका



क्या मिलता है और क्या नहीं



दोनों की शनि स्थिति

नमूना रिपोर्ट के अंश — नाम काल्पनिक हैं।

WhatsApp पर MILAN लिखें — +91-88720 24022 ₹199

लड़के और लड़की दोनों का नाम, जन्म तिथि, जन्म समय और जन्म स्थान भेजें · रिपोर्ट 2 घंटे में इसी WhatsApp पर PDF में